

आत्मज्ञान रुचि जगे हृदय में, निज-पर को मैं पहिचानूँ।
 समकित के आठों अंगों की, पावन महिमा को जानूँ॥
 तभी सार्थक जीवन होगा सार्थक होगी यह नर देह।
 अन्तर घट में जब बरसेगा पावन परम ज्ञान रस मेह॥
 पर से मोह नहीं होगा, होगा निज आत्म से अति नेह।
 तब पायेंगे अखंड अविनाशी निजसुखमय शिवगेह॥
 रक्षा-बंधन पर्व धर्म का, रक्षा का त्यौहार महान।
 रक्षा-बंधन पर्व ज्ञान का रक्षा का त्यौहार प्रधान॥
 रक्षा-बंधन पर्व चरित का, रक्षा का त्यौहार महान।
 रक्षा-बंधन पर्व आत्म का, रक्षा का त्यौहार प्रधान॥
 श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि सात शतक को करूँ नमन।
 मुनि उपसर्ग निवारक विष्णुकुमार महामुनि को वन्दन॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार एवं अकम्पनाचार्यादिसप्तशतकमुनिभ्यो जयमालापूर्णाध्वं
 निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

रक्षा बन्धन पर्व पर, श्री मुनि पद उर धार।
 मन-वच-तन जो पूजते, पाते सौख्य अपार॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अंजुलि-जल सम जवानी क्षीण होती जा रही।

प्रत्येक पल जर्जर जरा नजदीक आती जा रही॥

काल की काली घटा प्रत्येक क्षण मँडराही।

किन्तु पल-पल विषय तृष्णा तरुण होती जा रही॥

— डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

वीरशासन जयन्ती पूजन

(श्री राजमलजी पवैया कृत)

(ताटक)

वर्धमान अतिवीर वीर प्रभु सन्मति महावीर स्वामी ।
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर अन्तिम तीर्थंकर नामी ॥
श्री अरिहंतदेव मंगलमय स्व-पर प्रकाशक गुणधामी ।
सकल लोक के ज्ञाता-दृष्टा महापूज्य अन्तर्यामी ॥
महावीर शासन का पहला दिन श्रावण कृष्णा एकम ।
शासन वीर जयन्ती आती है प्रतिवर्ष सुपावनतम ॥
विपुलाचल पर्वत पर प्रभु के समवशरण में मंगलकार ।
खिरी दिव्यध्वनि शासन-वीर जयन्ती-पर्व हुआ साकार ॥
प्रभु चरणाम्बुज पूजन करने का आया उर में शुभ भाव ।
सम्यग्ज्ञान प्रकाश मुझे दो, राग-द्वेष का करूँ अभाव ॥

ॐ ह्रीं श्री सन्मति वीरजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री सन्मति वीरजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्री सन्मति वीरजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

भाग्यहीन नर रत्न स्वर्ण को जैसे प्राप्त नहीं करता ।

ध्यानहीन मुनि निज आतम का त्यों अनुभवन नहीं करता ॥

शासन वीर जयन्ती पर जल चढ़ा वीर का ध्यान करूँ ।

खिरी दिव्यध्वनि प्रथम देशना सुन अपना कल्याण करूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री सन्मतिवीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

विविध कल्पना उठती मन में, वे विकल्प कहलाते हैं ।

बाह्य पदार्थों में ममत्व मन के संकल्प रुलाते हैं ॥

शासन वीर जयन्ती पर चंदन अर्पित कर ध्यान करूँ ॥ खिरी ॥

ॐ ह्रीं श्री सन्मतिवीरजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अंतरंग बहिरंग परिग्रह त्यागूँ मैं निर्ग्रन्थ बनूँ ।

जीवन मरण, मित्र अरि सुख दुख लाभ हानि में साम्य बनूँ ॥

शासन वीर जयन्ती पर, कर अक्षत भेंट स्वध्यान करूँ ॥ खिरी ॥

ॐ ह्रीं श्री सन्मतिवीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।